

आभार प्रकट

आभार व्यक्त करना मनुष्य की सकारात्मक प्रवृत्ति है। यह शिष्टाचार का अहम हिस्सा है। लोकाचार एवं लोकव्यवहार का अनिवार्य तथा अपरिहार्य पहलू है। आत्म संतुष्टि के लिए आभार ज्ञापन अपरिहार्य है। प्रस्तुत शोध लेख को संपूर्ण करने में कई सहृदयवान् व्यक्तियों से सहायता प्राप्त हुई। उनका इसी क्षण आभार व्यक्त करना लघु शोध की प्रस्तुतकर्ता के रूप में मेरा कर्तव्य है। इसीलिए मैं सभी को यहां आभार ज्ञापन करना चाहती हूँ।

इस क्रम में सबसे पहले मैं प्रस्तावित विषय पर कार्य की अनुमति प्रदान करने के लिए तेजपुर विश्वविद्यालय की हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. प्रमोद मीणा सर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे इस विषय पर काम करने के लिए अनुमति प्रदान किया। इसके बाद मैं अपने इस लघु शोध प्रबन्ध के निर्देशक डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी सर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके कुशल निर्देशन में यह शोध कार्य संपन्न हो सका। विषय चयन से लेकर उसपर विचार-विमर्श आदि तक मैं मुझे सर से निरंतर प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिला। उन्होंने कदम कदम पर मुझे इस कार्य को पूरा करने में सहायता किया। जिसके लिए मैं उनके आगे आजीवन कृतज्ञ रहूंगी। हमारे विश्वविद्यालय के पहले के प्रध्यापक डॉ. शंभूनाथ मिश्र सर के प्रति भी आभार प्रकट करना चाहूंगी, उन्होंने मुझे इस विषय पर बहुत सहायता प्रदान किया। यहाँ तक कि उन्होंने विषय से सम्बंधित ग्रंथों को भी उपलब्ध कराया। इसके अतिरिक्त मैं विभाग के अन्य गुरुजनों डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा सर, डॉ. अंजु लता मैम, डॉ. अनुशब्द सर, शिप्रा शुक्ला के प्रति दिल से आभार व्यक्त करती हूँ। जिनसे मुझे शोध कार्य को पूरा करते समय उचित परामर्श और सहयोग मिला। तेजपुर विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय से भी मुझे शोध कार्य के दौरान सहायता मिली। पुस्तकालयाध्यक्ष, उपपुस्तकालयाध्यक्ष, तथा पुस्तकालय के अन्य कर्मचारियों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

इस शोध कार्य के लिए मैं अपने सहपाठी सहेलियों को भी धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। जिन्होंने इस शोध कार्य में एक मेरी बहुत सहायता की। साथ ही विभाग के मेरे अग्रज के प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ। उन्हीं के मार्गदर्शन से यह शोध कार्य पूरा हो पाया है।

अंत में मैं भगवान, अपने माता-पिता के प्रति श्रद्धा और स्नेह ज़ापन करती हूँ। जिन्होंने मुझे पढाई में किसी भी प्रकार से कमी महसूस होने नहीं दिया। उनके बिना मैं आज इस मुकाम तक नहीं पहुँच पाती। सच तो यह है कि उन्ही के अनंत प्रेरणा और आशीर्वाद से मैं इस कार्य को पूरा कर पायी।